"संस्कार जागृति मिशन" को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–06 वर्ष–01, सितम्बर 2019 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

चरित्र ही मानव की सुगंधि है : डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-06 वर्ष-01, संवत्सर 2076 सितम्बर 2019 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853120

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता | पृष्ठ संख्या

वेदवाणी..03
सम्पादकीय..04-05
परिस्थिति तथा वंशानुगत संस्कारों का प्रश्न..............06-07
कवि की कलम से..08
संसार को कैसे विचरें?..................... 09-10
ईमानदारी व विश्वास को खोना नहीं चाहिए....................11
स्वास्थ्य चर्चा..12
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां......................13-15
विज्ञापन..16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

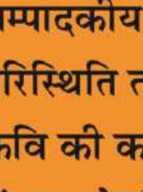

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

हमारा जीवन यज्ञमय हो

वेद मंत्र

ओ३म् मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। मान्तः स्थुर्नो अरातयः।।

-ऋ० १०। ५७। १ :, अथर्व० १३। १। ५९

ऋषिः-**बन्धुः**।। देवता-**विश्वेदेवाः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

विनय

हे इन्द्र, परमैश्वर्यवान्! हम तुमसे ऐश्वर्य नहीं मांगते। हमारी तुमसे याचना तो यह है कि हम सदा सन्मार्ग पर चलते जाएं, इसको कभी न छोड़ें। सन्मार्ग पर चलते हुए हमें जो कुछ ऐश्वर्य मिलेगा वही सच्चा ऐश्वर्य होगा। जिस किसी प्रकार मिला हुआ 'ऐश्वर्य' ऐश्वर्य नहीं होता-उसमें ईश्वरत्व नहीं होता-सामर्थ्य नहीं होता। सन्मार्ग से जो कुछ ऐश्वर्य मुझे मिलेगा, उस ऐश्वर्य को तुझसे पाकर हे इन्द्र! मेरी प्रार्थना है कि मैं यज्ञ से कभी विचलित न होऊं। यज्ञ करता हुआ-उपकार करता हुआ ही मैं उस तेरे दिये ऐश्वर्य को भोगूं। जो कुछ तुम्हारे द्वारा (तुम्हारे देवों द्वारा) मुझे मिला है, उसे तुम्हें (देवों को) बिना दिये भोगना चोरी है। ऐसा पाप स्वार्थवश हम कभी न करें। यज्ञ को, आत्मत्याग को, परार्थ में आत्म-विसर्जन को हम कभी न भूलें। यज्ञ के बिना भोग भोगना विषपान करना है, अतः हमारी दूसरी प्रार्थना है कि हम यज्ञ को कभी न छोड़ें।

हमारी तुमसे यह प्रार्थना नहीं कि तुम हमारे शत्रुओं को नाश कर दो। हमारी याचना तो यह है कि हमारे अपने अंदर 'अराति' न ठहरें। हमारे अंदर अराति न हों तो बाहर हमारा अराति कोई कैसे हो सकता है! अराति अर्थात् अदानभाव हमारे अन्दर क्षण-भर भी न ठहरे, क्षण-भर के लिए भी न आये। अदानभाव होते हुए यज्ञ असम्भव है, अतः हमारा एकमात्र शत्रु अदानभाव ही है। यह अन्दर का शत्रु ही हमारा शत्रु है। हे प्रभो! इससे हमारी रक्षा करो। फिर बाहर के किसी शत्रु की हमें परवाह नहीं।

शब्दार्थ

इन्द्र- हे परमेश्वर! **वयम्**- हम **पथः मा प्रगाम**- सन्मार्ग को छोड़कर न चलें
सोमिनः- ऐश्वर्ययुक्त होते हुए **वयं यज्ञात् (मा प्रगाम)**- हम यज्ञ को छोड़कर न चलें।
अरातयः- अदानभाव **नः अन्तः मा स्थुः**- हमारे अन्दर न ठहरें।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव, विचार, लेख, कविता, स्वास्थ्य चर्चा आदि हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें। हमें आपकी प्रतीक्षा रहेगी।

E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com **09719910557**

सम्पादकीय

श्रेष्ठ योनि में जन्म के बाद पाप क्यों?

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

वर्तमान समय में ऐसे भयंकर-भयंकर पाप हो रहे हैं कि सुनकर रौंगटे खड़े हो जाएं, आंखें डब-डबा जायें, हृदय दूवित हो जाये। अरे राम! कितना घोर अन्याय, घोर पाप आज समाज में अधिकांश लोग कर रहे हैं। लेकिन समाज के लोगों का ध्यान उधर नहीं जाता है कि हमारे वेद, शास्त्र, गीता, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में इस मानव शरीर को प्राप्त करना सबसे दुर्लभ बताया गया है। रामचरित मानस के उत्तर कांड में एक संवाद आता है, जिसका नाम काक भुशुण्ड और गरूड़ संवाद है। वहां दो विद्वान बैठकर आपस में बात कर रहे हैं- पहला व्यक्ति प्रश्न करता है कि बताओ संसार में ऐसा कौन सा चोला है, शरीर है, योनि है जो परमात्मा की भक्ति करने के बाद बड़ी मुश्किल से प्राप्त होती है? तो तुलसीदास जी ने अपनी रामचरित मानस के उत्तर कांड में ही एक चौपाई में इस प्रश्न को उठाया है- ''प्रथम कहूं नाथ मम धीरा। सबसे उत्तम कवन शरीरा।।'' अर्थात् वह विद्वान पूछता है कि संसार में ऐसा कौन सा चोला है जो बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है तो उत्तरकांड में ही तुलसीदास जी ने इसका उत्तर देते हुए लिखा है- ''नर तन सम नहिं कोहि देही। जीव चराचर जांचत जेही।।'' गोस्वामी तुलसीदास जी इस शरीर की प्रशंसा करते नहीं थकते और आगे लिखते हैं कि-

छिति जल पावन गगन समीरा। पंच रचित अति अगम शरीरा।।
बड़े भाग्य मानस तन पावा। सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थन्हिगावा।।

और आगे इसी प्रसंग में काक भुशुण्डिजी मनुष्य शरीर की प्रशंसा करते हुए कहते हैं-

तजऊ न तन निज इच्छा मरना। तन विनु वेद भजन नहिं वरना।।

भगवान श्री कृष्ण ने गीता के अंदर शरीर की प्रशंसा करते हुए लिखा कि- 'दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः' और महाभारतकार महर्षि व्यास जी ने शरीर रचना को श्रेष्ठ बताते हुए लिखा है- 'नहि मानुषात् श्रेष्ठतम् कश्चित्' अर्थात् मनुष्य से श्रेष्ठ कोई योनि नहीं है। वेद में मानव शरीर को परमात्मा से मिलने का साधन माना है-

इयं ते यज्ञाः तनूसे (यजु0)

इसी की पुष्टि तुलसीदास जी एक जगह और करते हैं-

साधन धाम मोक्षकर द्वारा। पाहि न जेहि परलोक सिधारा।।

शरीर धर्म है, सद्गुण है, सदाचार है। ऐसे मनुष्य शरीर के आरंभ को ही खत्म कर देना, काट देना, कितना घोर अपराध है, कितना अन्याय है, कितना पाप है। मेरे मन में बडा दुःख हो रहा है, जलन हो रही है पर क्या करूं? जिस मनुष्य शरीर से परमात्मा की प्राप्ति हो जाये, उस मनुष्य शरीर को पैदा ही नहीं होने देना, नष्ट कर देना पाप की आखिरी हद है। किसी जीव को मनुष्य शरीर प्राप्त न हो जाये, किसी का कल्याण न हो जाये, उद्धार न हो जाये, इसलिए भ्रूण हत्या करके नष्ट कर देना है। हमें पाप पाप भले ही लगे, हम नरक में भले ही जाये पर किसी जीव को कल्याण का मौका नहीं देना है।

जब पाण्डव वन में रहते थे उस समय द्रौपदी ने युधिष्ठर से प्रश्न किया कि महाराज आप धर्म को छोड़कर एक पांव भी आगे नहीं रखते, किसी का भी अनिष्ट नहीं करते, पर जंगल में भटकते हो, अन्न, जल आदि पास में नहीं है। फल, फूल आदि खाकर जीवन निर्वाह करते हो, परंतु जो अन्याय ही अन्याय करता है वह दुर्योधन खूब मौज कर रहा है, राज्य कर रहा है तो धर्म कर्म कुछ है कि नहीं? ईश्वर कोई न्याय करता है कि नहीं? युधिष्ठर ने कहा कि देवी तेरे भीतर यह बात कैसे पैदा हो गई, जो अपनी सुख सुविधा के लिए धर्म का पालन करता है वह धर्म के तत्व को नहीं जानता।..(शेष पेज 05 पर देखें)

पृष्ठ 04 का शेष....

सम्पादकीय : श्रेष्ठ योनि में जन्म के बाद पाप क्यों?

.....धर्म का तत्व तो वह जानता है जो कष्ट पाने पर भी धर्म का त्याग नहीं करता। धर्म का महत्व है, सुख सुविधा का नहीं। सुख सुविधा का महत्व तो पशुओं को भी है। मैं सुख सुविधा पाने के लिए धर्म का पालन नहीं करता। विचार करें जब धर्म का पालन अपनी सुख सुविधा के लिए नहीं किया जाता तो फिर उस सुख सुविधा के लिए भ्रूण हत्या जैसे भंयकर पाप कर रहे हैं, उनकी दशा क्या होगी? भ्रूण हत्या में भी विशेषकर गर्भ में स्थित कन्या को मार देते हैं, काट देते हैं, इससे भयंकर और पाप क्या होगा। संसार के लोकाचार में कन्या से अधिक लड़के को अधिक महत्व दिया जाता है लेकिन हमारे धर्मग्रन्थों में मातृशक्ति का दर्जा पिता से हजार गुना अधिक बताया है- ''सहस्रतु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते'' (मनु0)
साधारण बोलचाल में भी पहले मां का नाम लिया जाता है- सीताराम, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर आदि। प्रत्येक पुरूष वर्ग को विचार करना चाहिए कि हम सब मां की कोख से आये हैं, बाप की कोख से नहीं। सबने मां का दूध पिया है, बाप का नहीं। मां के स्नेह, प्यार से बच्चे का जो पालन होता है, वह पिता के स्नेह से नहीं। मां की बड़ी विलक्षण महिमा है। आप अपने सुख सुविधा के लिए लोभ में आकर मातृशक्ति का नाश करते हो, कन्या को पेट में ही मार देते हो यह बडा भारी पाप है। मातृशक्ति का इतना बड़ा अपमान हो नहीं सकता। गर्भ में जो बच्ची है, वह मातृशक्ति है, उस मातृशक्ति का गर्भ में ही निवारण कर दोगे, उसे जन्म ही नहीं लेने दोगे तो कहां जन्मोगे? किसका दूध पिओगे? गोदी कहां से लाओगे? किस जगह प्यार पाओगे? कौन ह्दय से लगायेगा? आजकल स्त्री-पुरूष के समान अधिकार की बात कही जाती है परंतु वास्तव में स्त्रियों का सामान अधिकार नहीं हो सकता प्रत्युत उनका तो दर्जा बहुत ऊंचा है। क्योंकि यह मां है, ईश्वर के बाद दूसरा अगर किसी का स्थान है तो वह मां है। साधुओं के बहुत मकान होते हैं पर वह घर नहीं कहलाते। घर तो स्त्री के कारण ही कहलाता है। इसलिए महर्षि व्यास जी महाभारत में लिखते हैं- ''न गृहं गृहमित्याहुर्गुणी गृहमुच्यते''
अर्थात् ईंट, पत्थर आदि से बने घर का नाम घर नहीं है। अपितु गृहणी ही घर कहलाती है। जरा आंख खोलो- नारी के सम्मान के लिए महाभारत का युद्ध हुआ, नारी जाति की रक्षा के लिए ही श्रीराम ने रावण से युद्ध किया, नारी जाति के सम्मान के लिए ही भीष्म जी ने अपने प्राण त्याग दिये पर शिखण्डी पर बाण नहीं चलाया। परंतु आज नारी को, मातृशक्ति को नष्ट करके उसको केवल भोग्य वस्तु बनाया जा रहा है। ऐसा घोर पाप मत करो।

विचारशील पुरूषों ! विचार करो कि आप अपना बुरा नहीं चाहते हो तो दूसरों का बुरा करने का आपको क्या अधिकार है? अत: किसी के भी सुख में बाधा मत डालो, किसी के भी जन्म में बाधा मत डालो, किसी का भी भला करने में बाधा मत डालो। जो बात आप अपने लिए नहीं चाहते उसको औरों के लिए भी मत करो। यह सबसे पहला धर्म है। जो जीव असमर्थ है कुछ नहीं कर सकता उसके साथ अत्याचार करना भगवान को मंजूर नहीं है। जो दूसरों का नाश करने के लिए समर्थ होते हैं उनको गीता के अनुसार भगवान श्री ष्ण असुर बताते हैं। कहते हैं- ''प्रभवन्त्यग्रकर्माण: क्षयाय जगतोहिता:''
जानबूझकर मूक, असमर्थ जीवों की हत्या करते हो और चाहते हो कि हमारा भला हो जाये, कैसे हो जायेगा? कल्याण कैसे हो जायेगा? शास्त्र जिसको महापाप कहता है और जिसको आप जानते हो उसे बड़े जोरों से कह रहे हो और फिर चाहते हो कि हमारी सद्गति हो जाये, तो सोचो कैसे हो सकती है? मेरे देश में दुर्गा, सीता, संतोषी आदि देवियों की पूजा तो नित्य प्रति मां बहिन करती हैं तथा करोड़ों लोग करते हैं परंतु यही यही मां बहिन अपने पेट के अंदर पलने वाली देवी की निर्मम हत्या कर देती हैं। विचार करो किसी कवि ने बहुत ही सुंदर लिखा है-

''ऊपर जिसका अंत नहीं, उसे आसमां कहते हैं। जहां में जिसका अंत नहीं उसे मां कहते हैं।।''

विवेक प्रिय आर्य

सम्पादक : संस्कार जागृति (पत्रिका)

परिस्थिति तथा वंशानुगत संस्कारों का प्रश्न

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा0 अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

संस्कारों का प्रश्न परिस्थिति तथा वंश परम्परा के आपसी सम्बन्ध का प्रश्न है। एक पक्ष यह है कि हम अपने पिछले जन्म से माता-पिता से वंश परम्परा द्वारा जो संस्कार लाते हैं वे हमारे जीवन का निर्माण करते हैं। दूसरा पक्ष है कि इस जन्म में हम जिस परिस्थिति में रहते हैं, जिस प्रकार के समाज में रहते हैं हम वैसे बन जाते हैं। वैदिक संस्कृति इन दोनों पक्षों को स्वीकार करती है। हमारे गत जन्मों के संस्कार तथा माता पिता के संस्कार भी बालक में आते हैं तथा जिस परिस्थिति में बालक रहता है वह भी उसके चरित्र का, जीवन का निर्माण करती है। इन दोनों विचारों को दार्शनिक शब्दों में 'भाग्य' तथा 'पुरषार्थ' कहा जाता है। कई लोग निरे भाग्यवादी होते हैं, कई निरे पुरषार्थवादी होते हैं। भाग्यवादियों का कहना है कि जो कुछ होता है वह पत्थर की लकीर की तरह हमारे भाग्य में लिखा है। उसे मेटा नहीं जा सकता है। पुरषार्थवादियों का कहना है कि लिखा कुछ नहीं आदमी पुरषार्थ करे तो जैसा चाहे वैसा बन सकता है। परन्तु हम जीवन में क्या देखते हैं? हर एक व्यक्ति के जीवन में ऐसी अवस्थाऐं आती हैं जब कितना ही वह प्रयास करे सब कुछ करके भी विफल हो जाता है। सबके जीवन में ऐसी भी अवस्थाऐं आती हैं जब प्रतिकूल अवस्थाओं के होते हुये भी अपने प्रयत्न से मनुष्य कठिनाइयों को लांघ जाता है। यह कहना कि सब कुछ भाग्य में लिखा है हम कभी स्वतंत्र नहीं हैं, गलत धारणा है। इसलिये गलत है क्योंकि जिसे हम भाग्य कहते हैं वह भी पिछले जन्म के पुरषार्थ से बना है। पिछले जन्म में हमने जो कुछ किया था उसका फल ही तो भाग्य कहा जाता है तो पिछले जन्म में हम स्वतंत्र थे। अगर पिछले जन्म में स्वतंत्र थे तो इस जन्म में भी क्यों नहीं?

भाग्यवाद में संस्कार का कोई स्थान नहीं है क्योंकि भाग्यवाद के अनुसार हम बालक में कोई परिवर्तन नहीं कर सकते। लेकिन वैदिक संस्कृति में तो बालक को जन्मते ही संस्कारों से ऐसा घेर दिया जाता है। संस्कार भी एक नहीं पूरे 11 संस्कार तो बालक के 6-8 वर्ष की आयु में ही कर दिये जाते हैं गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्तोनयन, जातिकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, उपनयन तथा वेदारम्भ। जब बालक का जीवन अपरिपक्व होता है तभी उस पर संस्कार डाले जा सकते हैं, तभी उस पर संस्कारों की चोट पर चोट की जा सकती है। उसे ऐसी परिस्थिती, ऐसे वातावरण में रखा जाता है जिससे उसके भावी जीवन की सही दिशा बन जाये।

भारतीय ऋषियों ने संस्कार पद्धति का निर्माण इसी आशय से किया था क्योंकि वे निरे भाग्यवादी नहीं थे। पिछले जन्मों के संस्कारों के साथ इस जन्म के संस्कारों से मानव के जीवन का नव निर्माण हो सकता है यह मानते थे। वे भाग्यवाद के साथ पुरषार्थवाद को भी उतना ही महत्व देते थे। संस्कार पद्धति द्वारा इस छोटे से जन्म में जन्म-जन्मान्तरों तथा माता-पिता द्वारा आये बुरे संस्कारों को कैसे मिटाया जा सकता है? वैदिक संस्कृति के अनुसार बालक के निर्माण में दो तत्व, दो प्रकार के संस्कार काम करते हैं। एक प्रकार के संस्कार तो वे हैं जिन्हे वह जन्म-जन्मान्तर से तथा माता-पिता द्वारा अपनेसाथ ला रहा है, जिन्हे भाग्य कहा जाता है। दूसरे वे संस्कार हैं जिन्हे वह इस जन्म को धारण करने के पश्चात प्राप्त करता है। परिस्थिति से, समाज के सम्पर्क में आकर ग्रहण करता है, जिन्हे पुरषार्थ कहा जाता है। इस जन्म के पुरषार्थ से नये संस्कार पडते हैं यह बात ठीक है। समाज में जिस प्रकार का वातावरण हम उत्पन्न करना चाहे उनका बालक के निर्माण में प्रभाव होता है। परन्तु अगर यह बात ठीक है कि बालक जन्म-जन्मान्तर के और... (शेष पेज 07 पर देखें)

पृष्ठ 06 का शेष....

परिस्थिति तथा वंशानुगत संस्कारों का प्रश्न (लेखक : डा0 अर्चना प्रिय आर्य)

अपने माता-पिता के संस्कारों को भी लेकर आता है तो प्रश्न उठ खडा होता है कि संस्कार पद्धति द्वारा इस छोटे से जन्म में जन्म-जन्मान्तर तथा माता-पिता के बीज से प्राप्त संस्कारों में से कैसे परिवर्तन किया जा सकता है? तो संस्कार करना बेकार है। क्या एक जन्म के संस्कार पिछले इकठ्ठे अनन्त जन्मों के संस्कारों को मिटा सकते हैं? यह प्रश्न क्यों उठता है? पिछले जन्म के अनन्त संस्कार इस जन्म के थोडे बहुत संस्कारों से कैसे मिट सकते हैं यह प्रश्न क्यों उठता है? इस प्रश्न का आधार यह है कि हम संस्कार और कर्म को एक ही वस्तु समझते हैं। हमें यह शंका होती है कि हमने पिछले जन्मों में- एक जन्म में नहीं सैकडों जन्मों में लाखों करोडों कर्म किये उन सबका फल भोग किये बिना इस जन्म के संस्कारों द्वारा उन्हें कैसे मिटाया जा सकता है? परन्तु यह शंका गलत है क्योंकि संस्कार भी तो कर्म का ही फल है। आत्मा एक जन्म से दूसरे जन्म में जाता हुआ था इस जन्म में ही अपना जीवन बिताता हुआ भिन्न-भिन्न कर्मों की गठरी को अपने ऊपर लादे नहीं फिरता। जैसे बीज में वृक्ष समा जाता है वृक्ष बीज का ही फैलाव है। इसी प्रकार संस्कार में सारे कर्म समाये रहते हैं। अनन्त कर्म समेट कर संस्कार में समा जाते हैं। प्रश्न एक-एक कर्म का फल भोगना, यह नहीं है क्योंकि सब कर्मों का एक घोल बन जाता है जिसे संस्कार कहते हैं। इसलिए असली समस्या भिन्न-भिन्न कर्मों की नहीं रहती संस्कारों की हो जाती है। संस्कारों को नवीन संस्कारों से तत्काल मिटाया जा सकता है। एक-एक को मिटाने की जरुरत नहीं रहती।

समाचार | संस्कार जागृति मिशन ने किया जिला पंचायत अध्यक्ष का सम्मान

हाथरस। सादाबाद क्षेत्र के ऊंचागांव (सुसाइन) में संस्कार जागृति मिशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हाथरस के जिला पंचायत अध्यक्ष डा.विनोद उपाध्याय का माल्यार्पण व पगड़ी पहनाकर स्वागत किया गया। मिशन की अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य व सचिव विवेक प्रिय आर्य ने श्री उपाध्याय का सम्मान पत्र भेंट कर अभिनंदन किया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष ने कहा कि संस्कार ही हमारी पूंजी हैं। लेकिन आज परिवारों से संस्कार खत्म होते जा रहे हैं, जोकि बहुत सोचनीय विषय है। उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि संस्कार जागृति मिशन भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को पुन: जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है। इस दौरान उन्होंने मिशन द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दीं। मिशन की अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि आज समाज पाश्चात सभ्यता की चकाचौंध में बहता हुआ जा रहा है और अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों को भूलता हुआ जा रहा है। मिशन इस दिशा में लोगों को जागरूक करके अपनी संस्कृति से जोडने का कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह बहुत बडा कार्य है, इसे अकेला करना असंभव है, आप सभी लोगों के सहयोग से ही मिशन इस कार्य को कर रहा है। उन्होंने उपस्थित जनों से मिशन से जुड़ने की भी अपील की। संचालन करते हुए संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य पूर्व प्रधान ने कहा कि समाज सुधार के क्षेत्र में संस्कार जागृति मिशन एक अहम भूमिका निभा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता लखम सिंह आर्य द्वारा की गयी। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, रामप्रकाश आर्य, प्रियव्रत ओम आर्य, जयपाल सिंह आर्य, वेद प्रकाश, ऋषिपाल सिंह, सहाब सिंह अग्रे, भगवान सिंह, प्यारेलाल, राजवीर सिंह, वीरी सिंह आदि थे।

कवि की कलम से | श्रीकृष्ण के वंशजो सुनो...

गीत : ऐ मेरे कृष्ण के वंशजो सब सुनो...

(तर्ज : मेरे रश्के कमर)

रचियता : कवि रोहित आर्य
आर्य वीर दल (दिल्ली)

ऐ मेरे कृष्ण के वंशजो सब सुनो, जुल्म योगीराज पर न ढाया करो।
मानते जिसको भगवान हो तुम सभी, मेरे श्रीकृष्ण को न नचाया करो।। 0 ।।

बाप-दादा के जैसे मेरे श्याम थे, कितने सुन्दर किये उम्र भर काम थे।
स्वांग करवा के खुद अपने उस पुरखे का, खिल्ली हरगिज नहीं तुम उड़ाया करो।। 1 ।।

कितना उज्ज्वल चलन था जी घनश्याम का, उम्र भर न किया कुछ गलत काम था।
देवतओं के जैसा मेरा कृष्ण था, बोल छलिया न उसको लजाया करो।। 2 ।।

कृष्ण ने सुन लो माखन चुराया नहीं, छीन कर गोपियों से भी खाया नहीं।
लाखों गायों के स्वामी मेरे कृष्ण थे, चोर उनको न हरगिज बताया करो।। 3 ।।

नारी की अस्मिता पर हुआ क्रुद्ध था, महाभारत के जैसा किया युद्ध था।
गोपियों के न कपड़े उठाये कभी, न लफंगा उसे तुम बनाया करो।। 4 ।।

एक सम्राट से चूड़ी बिकवाते हो, धूल में उसकी इज्जत को मिलवाते हो।
ऐसा कहते हुए शर्म आती नहीं, बुद्धि अपनी जरा तुम लगाया करो।। 6 ।।

रास लीला नहीं गोपियों संग करी, कोई महिला नहीं कृष्ण ने तंग करी।
रास करवा के तुम मेरे श्री कृष्ण से, उनको लम्पट न हरगिज दिखाया करो।। 7 ।।

न हजारों थीं उनकी सहधर्मिणी, एक पत्नी थी उनकी सिर्फ रुक्मिणी।
एक ही पुत्र प्रद्युम्न पैदा किया, आप न उन पै उँगली उठाया करो।। 8 ।।

राजनीति के पण्डित मेरे श्याम थे, नीतियों में निपुण मेरे घनश्याम थे।
योगियों के थे राजा श्री कृष्ण जी, उनका अपमान तुम न कराया करो।। 9 ।।

गीता जैसा अनोखा दिया ज्ञान था, पार्थ का कर दिया दूर अज्ञान था।
कर्म करना सिखाया श्री कृष्ण ने, उनके सम्मान को न गिराया करो।। 10 ।।

धर्म रक्षा के हित कंस को मारा था, अपना भाई शिशुपाल संहारा था।
धर्म के ही लिये महाभारत किया, ध्यान से उसको पढ़ व पढ़ाया करो।। 11 ।।

यज्ञ सारी उमर कृष्ण करते रहे, भाव भक्ति के ही सिर्फ भरते रहे।
पाप का फल मिलेगा उन्होंने कहा, इसलिए पाप तुम न कमाया करो।। 12 ।।

हमको बतलाया था ऋषि दयानन्द ने, आप्त पुरुषों के जैसे श्री कृष्ण थे।
इसलिये बोलने के लिए उनकी जय, हाथ 'रोहित' के सँग में उठाया करो।। 13 ।।

Sanskar Jagrati Mission
follow us on twitter
"like" us on facebook
Contact To Join Our Mission
09719910557 / 09058860992

'' संसार में कैसे विचरें?''

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

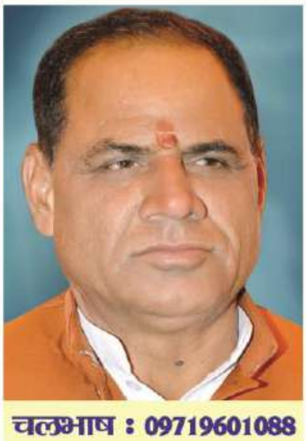

चलभाष : 09719601088

वेदांती लोग संसार को ही मिथ्या नहीं कहते, अपने को भी ब्रह्म कहते हैं। उनकी यह मिथ्या धारणा है। मैं अपने को राजा कहता फिरूं और भीख मांगता फिरूं- इन दोनों बातों में संगति नहीं है। अपना देश इसलिए क्रियाहीन, शक्तिहीन हो गया। क्योंकि इस देश में अपने को ब्रह्म कहने वालों की टोलियां की टोलियां उठ खड़ी हुई। अपने को राजा कह देने से कोई राजा नहीं बन जाता है। इसमें संदेह नहीं कि हमें सशक्त होना है, आनंदमय होना है, राजा बनकर जीना है परंतु इसका तरीका यह नहीं कि हम अपने को ब्रह्म कहने लगे, राजा कहने लगे। इस रास्ते पर चलकर देश का सत्यानाश हो गया भिखारियों की मंडलियां दर-दर भीख मांगने लगी। इसका सही रास्ता तो यही है कि हम अपना संबंध उस आनंदमय सत्ता से जोड़ें। रेल का डिब्बा जब इंजन से जुड़ता है तब 50-60 किलोमीटर की रफ्तार से दौड़ने लगता है। इसी प्रकार जब ध्यान द्वारा हमारी चेतना का संपर्क तुरीयावस्था में पहुंचकर आनंद के स्रोत विश्व चेतना से होगा तब हमारी आत्मा भी आनंद से लबालब भर उठेगी, हममें आनंद छलकने लगेगा और वह आनंद हम तक ही सीमित नहीं रहेगा जो भी हमारे संपर्क में आएगा वह भी आनंदमय हो जाएगा। तब हम संसार को मिथ्या और अपने को ब्रह्मा या राजा नहीं कहते फिरेंगे। दूसरे भी हमें राजा ही अनुभव करेंगे, तब हम संसार को मिथ्या कहकर उससे उपराम नहीं हो जाएंगे, परंतु संसार को यथार्थ मानकर उस पर शासन करेंगे और संसार को जिधर चाहोगे उधर चला देंगे। चुंबक के संपर्क में आने से लोहा चुंबक हो जाता है ठीक इसी प्रकार ध्यान द्वारा आनंद के स्रोत के साथ जुड़ जाने से मानव भी आनंदमयं हो जाता है। ध्यान की प्रक्रिया क्या है? जैसे कपड़े को रंगा जाता है वैसे ही ध्यान द्वारा आत्मा को रंगा जाता है। कपड़े को रंग कर धूप में सुखा देते हैं, उसे छाया में नहीं सुखाते हैं, धूप में ही डालते हैं क्योंकि जितना रंग उड़ना है वो उड़ जाए। फिर उसे रंगते हैं फिर धूप में डालते हैं, इस बार भी रंग उड़ता है परंतु पहले से कम। रंगना फिर धूप में रंग का उड़ना इस प्रक्रिया को करते-करते रंग कपड़े में स्थिर रूप से टिक जाता है। यही प्रक्रिया आत्मा के साथ की जाती है, ध्यान करो फिर काम करो, ध्यान करो फिर काम करो- ध्यान और काम तथा काम और ध्यान- परलोक और इहलोक, इहलोक और परलोक, परमेश्वर और संसार, संसार और परमेश्वर- इस प्रकार दोनों क्षेत्रों में आने जाने से चेतना वास्तविकता में जगत में रहती है क्योंकि जैसे ईश्वर सत्य है वैसे यह जगत भी सत्य है। संसार में काम करने के बाद जब ध्यान में जाओगे तब ईश्वर के साथ संपर्क में आने के कारण व्यक्ति की आत्मा में इतनी शक्ति का संचार हो जाएगा, इतना उत्साह, आनंद भर जाएगा कि भौतिक जगत में काम करते हुए भी आनंद बना रहेगा। तभी तो उपनिषदों में जनक आदि राजाओं के विषय में ऐसा वर्णन आता है कि इस संसार में काम करते हुए भी उनके हृदय में भगवान से लौ लगी रहती थी। जप का, ध्यान का उद्देश्य मानव को संसार से उपराम बना देना नहीं, अपितु सांसारिक जीवन को भी सफल बना देना है। ध्यान में बैठने पर आत्मा एक प्रकार से ईश्वर के संपर्क में आकर उसकी शक्ति से चार्ज हो जाती है, भर जाती है। व्यक्ति आनंद, उत्साह, प्रफुल्लता से छलछलाने लगता है, और यह छलछलाहट उस तक ही सीमित नहीं रहती, दूसरों को भी इसका अनुभव होने लगता है।

लोगों की यह मिथ्या धारणा है कि यह संसार असत्य है और उनकी सोच है कि जब तक हम इस संसार से विरक्त नहीं हो जाते, इसे छोड़ नहीं देते तब तक आनंदमय भगवान के दर्शन नहीं हो सकते।

....(शेष पेज 10 पर देखें)

पृष्ठ 09 का शेष....

''संसार में कैसे विचरें?'' (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

संसार असत्य नहीं है सत्य है और भगवान की सत्य नहीं है सत्य है। हम मकान में बैठे हैं मकान सत्य है परंतु मकान के बाहर बगीचा है वह भी सत्य है। मकान में बैठकर मकान का आनंद लेना, मकान के बाहर बगीचे का आनंद लेना इन दोनों को मिलाने से पूरा आनंद मिलता है। हमारे सामने एक फूल है फूल भी सत्य है फूल के भीतर का रस भी सत्य है और फूल की सुगंधी भी सत्य है।

वेदांती लोग संसार को माया मोह तथा मिथ्या जाल कहते हुए एक भ्रांत धारणा में पड़ जाते हैं, वह संसार को छोड़ने की बात कहते हैं परंतु दूसरों से तो संसार क्या छूटना था उनसे भी तो नहीं छूटता। तभी श्री शंकराचार्य ने दो शब्दों को गढ़ा- ''परमार्थ में संसार असत्य है और व्यवहार में संसार सत् है''। असली चीज तो व्यवहार है, जब व्यवहार में उसे सत् रहना है तब परमार्थ की बात व्यर्थ है। यही कारण है कि परमार्थ का नाम लेने वालों के जीवन उसी तरह काम, क्रोध, वासना से सने दिखाई देते हैं जैसे अन्य संसारी जीवो के। हर समय भक्ति में डूबे रहना- सांसारिक लोगों को निकम्मा बना देती है। नाम लें भक्ति करें परंतु काम भी करें सिर्फ नाम ही लेते रहने से काम नहीं होता और सिर्फ काम ही करते रहने से काम करने की शक्ति ही नहीं रहती। भक्ति द्वारा शक्ति का संचय करना और संचित शक्ति से काम में लग जाना यही सही रास्ता है। हम कुछ देर के लिए बैंक में जाते हैं वहां से धन लेकर दिनभर बाजार में काम करते हैं, इसी से संसार के कारोबार चलते हैं। अगर हम बैंक में ही बंद रहें तो बेकार और अगर बैंक से पैसे लिए बिना बाजार में कारोबार के लिए चले जाएं तो बेकार। ध्यान में बैठना बैंक में जाना है और ध्यान के बाद काम में लग जाना बाजार में जाना है। बैंक में जाओ और बाजार में आओ, नाम लो परंतु उसके बाद काम करो, ध्यान में बैठो और शक्ति संचित कर संसार के व्यवहार को चलाओ यही। सर्वांगीण दृष्टि है, यही यथार्थ आध्यात्मवाद है। इसी की घोषणा वेद में ''तेन त्यक्तेन भुंजीथा:'' कहकर की गई है। संसार का भोग करो परंतु ध्यान रखो कि भोग ही सब कुछ नहीं है।

मैं संस्कार जागृति मिशन द्वारा किये जा रहे महान कार्यों में किस प्रकार से सहयोग कर सकता हूं?

#1 सोशल मीडिया पर प्रचार करके

संस्कार जागृति मिशन

हमारे सोशल मीडिया एकाउंट्स से जुडकर हमारी पोस्ट को अपने विभिन्न सोशल मीडिया पर अधिक से अधिक प्रचारिक कर सकते हैं।

SanskarJagratiMission | #SanskarJagratiMission

प्रेरक प्रसंग

ईमानदारी और विश्वास खोना नहीं चाहिए

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

सऊदी अरब में बुखारी नामक एक विद्वान रहते थे। वह अपनी ईमानदारी के लिए मशहूर थे। एक बार वह समुद्री जहाज से लंबी यात्रा पर निकले। उन्होंने सफर के खर्च के लिए एक हजार दीनार अपनी पोटली में बांध कर रख लिए। यात्रा के दौरान बुखारी की पहचान दूसरे यात्रियों से हुई। बुखारी उन्हें ज्ञान की बातें बताते। एक यात्री से उनकी नजदीकियां कुछ ज्यादा बढ़ गईं। एक दिन बातों-बातों में बुखारी ने उसे दीनार की पोटली दिखा दी। उस यात्री को लालच आ गया। उसने उनकी पोटली हथियाने की योजना बनाई। एक सुबह उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया, हाय मैं मार गया। मेरा एक हजार दीनार चोरी हो गया। वह रोने लगा। जहाज के कर्मचारियों ने कहा कि तुम घबराते क्यों हो। जिसने चोरी की होगी, वह यहीं होगा। हम एक-एक की तलाशी लेते हैं। वह पकड़ा जाएगा। यात्रियों की तलाशी शुरू हुई। जब बुखारी की बारी आई तो जहाज के कर्मचारियों और यात्रियों ने उनसे कहा, अरे साहब, आपकी क्या तलाशी ली जाए। आप पर तो शक करना ही गुनाह है। यह सुन कर बुखारी बोले, 'नहीं, जिसके दीनार चोरी हुए है उसके दिल में शक बना रहेगा। इसलिए मेरी भी तलाशी भी जाए।' बुखारी की तलाशी ली गई। उनके पास से कुछ नहीं मिला। दो दिनों के बाद उसी यात्री ने उदास मन से बुखारी से पूछा, आपके पास तो एक हजार दीनार थे, वे कहां गए? बुखारी ने मुस्करा कर कहा कि उन्हें मैंने समुद्र में फेंक दिया। तुम जानना चाहते हो क्यों? क्योंकि मैंने जीवन में दो ही दौलत कमाई थीं- एक ईमानदारी और दूसरा लोगों का विश्वास। अगर मेरे पास से दीनार बरामद होते और मैं लोगों से कहता कि ये मेरे हैं तो लोग यकीन भी कर लेते लेकिन फिर भी मेरी ईमानदारी और सच्चाई पर लोगों का शक बना रहता। मैं दौलत तो गंवा सकता हूं लेकिन ईमानदारी और सच्चाई को खोना नहीं चाहता।

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका
श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)
की अमृतमयी वाणी में
मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित
यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश
कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

''सस्कार जागृति मिशन'' से जुड़कर अपने बच्चों को संस्कारित करें। सम्पर्क करें : 09719910557

संस्कार जागृति मिशन
एक कदम संस्कारों की ओर
कार्यालय : 52, ताराधाम कॉलोनी, पुष्पांजलि द्वारिका के पास, पोस्ट-अडूकी, मथुरा (उ.प्र.) -281006

स्वास्थ्य चर्चा
''लौकी'' से होने वाले फायदे

नीति प्रिय आर्य

हर घरों में लौकी सब्जी के रूप में बनाई जाती है जिससे अधिकतर लोग खाना पसंद करते हैं, तो कुछ लोग नहीं, पर इसमें पाये जाने वाले पौष्टिक गुणों के कारण लौकी का उपयोग अब हर घरों में किया जाने लगा है। कई जगहों पर लौकी को घीया के नाम से भी जाना जाता है। लौकी की सबसे अच्छी बात ये है कि ये बेहद आसानी से मिल जाती है। इसके अलावा लौकी में कई ऐसे गुण होते हैं जो कुछ गंभीर बीमारियों में औषधि की तरह काम करते हैं। लौकी में महत्वपूर्ण पोषक तत्वों की मात्रा पाई जाती है जो शरीर को कई खतरनाक बीमारियों से बचाती है। इसमें फाइबर और पानी की मात्रा अधिक होने से लोग गर्मियों के समय में इसका सेवन अधिक करते है। लौकी को हल्की सब्जियों में गिना जाता है। इसे खाने से पेट में भारीपन नहीं रहता, बल्कि यह शरीर में ताजगी बनाए रखने में सहायक है।यह शरीर में ठंडाहट देने के साथ स्वास्थ्य एंव सौंदर्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

लौकी से होने वाले सात लाभ :-

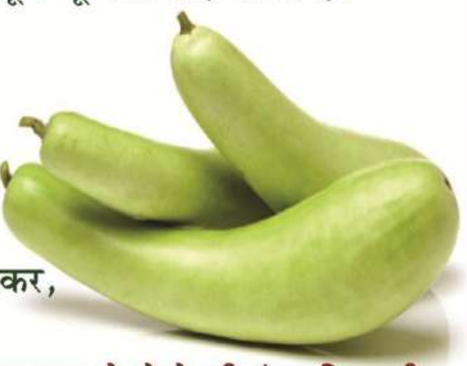

1. कुछ ही लोगों को ये पता होगा कि लौकी खाने से वजन कम होता है। आपको शायद इस बात पर यकीन न हो लेकिन किसी भी दूसरी चीज की तुलना में लौकी ज्यादा तेजी से वजन कम करती है। आप चाहें तो लौकी का जूस नियमित रूप से पी सकते हैं। इसके अलावा इसे उबालकर, नमक डालकर भी इस्तेमाल में ला सकते हैं।
2. लौकी में नेचुरल वॉटर होता है। ऐसे में इसके नियमित इस्तेमाल से प्राकृतिक रूप से चेहरे की रंगत निखरती है। आप चाहें तो इसके जूस का सेवन कर सकते हैं या फिर उसकी कुछ मात्रा हथेली में लेकर चेहरे पर मसाज कर सकते हैं। लौकी की एक स्लाइस को काटकर चेहरे पर मसाज करने से भी चेहरे पर निखार आता है।
3. मधुमेह के रोगियों के लिए लौकी किसी वरदान से कम नहीं है। प्रतिदिन सुबह उठकर खाली पेट लौकी का जूस पीना मधुमेह के मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद होता है।
4. अगर आपको पाचन क्रिया से जुड़ी कोई समस्या है तो लौकी का जूस आपके लिए बेहतरीन उपाय है। लौकी का जूस काफी हल्का होता है और इसमें कई ऐसे तत्व होते हैं जो कब्ज और गैस की समस्या में राहत देने का काम करते हैं।
5. लौकी में कई तरह के प्रोटीन, विटामिन और लवण पाए जाते हैं। इसमें विटामिन ए, विटामिन सी, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम पोटेशियम और जिंक पाया जाता है। ये पोषक तत्व शरीर की कई आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और शरीर को बीमारियों से सुरक्षित भी रखते हैं।
6. लौकी का इस्तेमाल करना दिल के लिए बेहद फायदेमंद होता है। इसके इस्तेमाल से हानिकारक कोलेस्ट्रॉल कम हो जाता है। कोलेस्ट्रॉल की मात्रा अधिक होने से दिल से जुड़ी कई बीमारियों के होने का खतरा बढ़ जाता है।
7. लौकी पाचन संबंधी समस्याओं का उत्तम इलाज है, साथ ही यह एसिडिटी में भी लाभप्रद है। लौकी को अपने भोजन में शामिल करने से पाचन क्रिया को बेहतर किया जा सकता है।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

हापुड में आयोजित रामायण के प्रेरक प्रसंग कार्यक्रम में संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करतीं आर्य समाज की पदाधिकारीगण।

हाथरस के जिला पंचायत अध्यक्ष विनोद उपाध्याय जी का स्वागत करते सचिव विवेक प्रिय आर्य व कार्यकारिणी सदस्य रामप्रकाश आर्य जी।

हापुड़ में मिशन अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी का ओ3म् का पटुका ओढ़ाकर स्वागत करतीं महिला आर्य समाज की प्रधान।

हाथरस जिला पंचायत अध्यक्ष डा0 विनोद उपाध्याय जी के साथ मिशन अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी, सचिव विवेक प्रिय आर्य जी, श्री लखम सिंह आर्य जी।

हापुड़ में आर्य समाज द्वारा आयोजित रामायण के प्रेरक प्रसंग कार्यक्रम में विचार व्यक्त करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

ऊंचागांव में आयोजित एक कार्यक्रम में बोलते मिशन संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य। मंचस्थ हैं पूर्व मंत्री व विधायक रामवीर उपाध्याय जी व जि.पं. अध्यक्ष विनोद उपाध्याय।

मथुरा स्थित ताराधाम कॉलोनी में वृक्षारोपण करते मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी व अन्य कॉलोनीवासी।

नगला फत्ता मिशन संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान व जिला पंचायत अध्यक्ष विनोद उपाध्याय का स्वागत करते ग्रामीणजन।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य को रखी बांधतीं मिशन की अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी व उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी।

भरतपुर के कंजौली में आयोजित श्रीराम कथा में संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष कथा वाचिका श्रद्धेया डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी का समान करतीं महिलाएं।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

अमर उजाला — अलीगढ़ | बुधवार, 14 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन ने किया जिला पंचायत अध्यक्ष विनोद का सम्मान

जिपं अध्यक्ष का स्वागत करते संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारी।

सादाबाद। गांव ऊंचागांव में संस्कार जागृति मिशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत के अध्यक्ष डॉ. विनोद उपाध्याय का माल्यार्पण व पगड़ी पहनाकर स्वागत किया गया। मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य व सचिव विवेक प्रिय आर्य ने जिपं अध्यक्ष का सम्मानपत्र भेंट कर अभिनंदन किया। जिला पंचायत अध्यक्ष ने कहा कि संस्कार ही हमारी पूंजी हैं। लेकिन आज परिवारों से संस्कार खत्म होते जा रहे हैं, जो कि बहुत सोचनीय विषय है। उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि संस्कार जागृति मिशन भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है। इस दौरान उन्होंने मिशन द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दीं। मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि आज समाज पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में बहता हुआ जा रहा है और अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों को भूलता जा रहा है। मिशन इस दिशा में लोगों को जागरूक करके अपनी संस्कृति से जोड़ने का कार्य कर रहा है। संचालन संरक्षक सत्यप्रिय आर्य पूर्व प्रधान तथा अध्यक्षता लखन सिंह आर्य द्वारा की गयी। इस मौके पर मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, रामप्रकाश आर्य, प्रियव्रत ओम आर्य, जयपाल सिंह आर्य, वेद प्रकाश, ब्रह्मपाल सिंह, साहब सिंह आर्य, भगवान सिंह, प्यारेलाल, राजवीर सिंह, वीरी सिंह आदि थे।

राजपथ — 13 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन ने किया हाथरस के जिला पंचायत अध्यक्ष का सम्मान

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊँचा गाँव में आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष हाथरस डा. विनोद उपाध्याय का माल्यार्पण व पगड़ी पहनाकर

ब्रज गरिमा — 12 अगस्त 2019

जिला पंचायत अध्यक्ष सम्मानित

आज — आगरा, 08 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन ने सुषमा को दी श्रद्धांजलि

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन ने ताराधाम कालोनी स्थित कार्यालय पर शोकसभा कर भारत की पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि सुषमा स्वराज महान नेता व हिंदी की शानदार वक्ता थीं। वह आज के युग में उत्कृष्ट राजनेताओं में से एक थीं और सबसे बढ़कर एक दयालु इंसान थीं। अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि सुषमा जी नारी शक्ति की आदर्श, भारतीय संस्कृति की पहचान, प्रखर वक्ता, एक शालीन व ईमानदार नेता थीं। वह सार्वजनिक जीवन में गरिमा, साहस और निष्ठा की प्रतिमूर्ति थीं। लोगों की सहायता के लिए वे हमेशा तत्पर रहीं। उनकी सेवाओं को लिए सभी भारतीय उन्हें सदैव याद रखेंगे। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कि वह राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में अनेकों दायित्वों पर रहते हुए अंतिम समय तक राष्ट्र सेवा में लगी रहीं। जब से वो राजनीतिक जीवन में आयी तब से लेकर, विपक्ष की नेता, विदेश मंत्री रहने तक हमेशा एक आदर्श व्यक्तित्व का उदाहरण समाज के सामने रखा। इस दौरान मिशन के पदाधिकारियों ने दो मिनट का मौन रखकर सुषमा जी की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। शोक व्यक्त करने वालों में मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य, अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य, सचिव विवेक प्रिय आर्य, वंदना प्रिय आर्य, नवीन शर्मा, लाल सिंह आर्य, दीपक सारस्वत, उमेश अग्रवाल, एससी शर्मा, लव गौर, हेमंत सैन, रामप्रकाश, नीरज राठौर आदि थे।

ब्रज गरिमा — 7 अगस्त 2019

पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के निधन पर जताया शोक

मथुरा ।संस्कार जागृतिमिशन ने ताराधाम कॉलोनी स्थित कार्यालयपर शोकसभा कर भारत की पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए । मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि सुषमा स्वराज महान नेता व हिंदी की शानदार वक्ता थीं । वह आज के युग में उत्कृष्ट राजनेताओं में से एक थीं और सबसे बढ़कर एक दयालु इंसान थीं । अध्यक्ष डॉ अर्चना

छोटी सी बात — मथुरा | बुधवार | 07 अगस्त 2019

सुषमा स्वराज के निधन पर जताया शोक

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन ने ताराधाम कॉलोनी स्थित कार्यालय पर शोकसभा कर भारत की पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय

ब्रज गरिमा — 5 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन ने किया हर्ष व्यक्त

मथुरा, केन्द्र सरकार द्वारा जम्मू कश्मीर से धारा 370 व 35ए को समाप्त करने के फैसले का संस्कार जागृति मिशन ने स्वागत करते हुए हर्ष व्यक्त किया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व गृहमंत्री अमित शाह को बधाई दी । मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि आज का एतिहासिक दिन है, अब पूरे देश में एक ही संविधान व ध्वज लागू रहेगा ।सरकार का यह फैसला कश्मीर की समस्या को हल करने में यह अहम कदम होगा । सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि यह फैसला अद्भुत, अविश्वसनीय, अकल्पनीय है । ये पीएम मोदी व गृहमंत्री शाह की अगस्त क्रांति है । स्वतंत्र भारत का एतिहासिक फैसला है । सही मायने में आज जम्मू

दैनिक जागरण — आगरा/मथुरा, 8 अगस्त 2019

मानवीयता की प्रतिमूर्ति थीं सुषमा

रतनलाल फूल कटोरी देवी विद्यालय में पूर्व विदेशमंत्री स्व. सुषमा स्वराज को श्रद्धांजलि अर्पित करती छात्राएं व शिक्षिकाएं ● जागरण

जासं, मथुरा: पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के निधन पर मथुरा वासी भी सन्न रह गए। भाजपा नेताओं समेत विभिन्न संगठनों ने उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उन्हें करुणा और मानवीयता की प्रतिमूर्ति बताया है। संस्कार जागृति मिशन की ताराधाम कॉलोनी स्थित कार्यालय पर शोकसभा हुई। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि सुषमा स्वराज महान नेता व शानदार वक्ता थीं। अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने उन्हें करुणा और मानवीयता की प्रतिमूर्ति बताया। सचिव विवेक प्रिय आर्य, वंदना प्रिय आर्य, नवीन शर्मा, लाल सिंह आर्य, दीपक सारस्वत, उमेश अग्रवाल, एससी शर्मा, लव गौर, हेमंत सैन, रामप्रकाश, नीरज राठौर आदि मौजूद रहे। रतनलाल फूलकटोरी देवी सरस्वती बालिका विद्या मंदिर में दो मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। विद्यालय प्रधानाचार्या डा नीता सिंह ने बताया कि वह एक कर्मठ महिला नेत्री थीं। भाजपा नेता वीरेंद्र अग्रवाल, प्रदीप गोस्वामी, चिंताहरण चतुर्वेदी, ओमप्रकाश सिंह, मदन मोहन श्रीवास्तव, संजय प्रताप सिंह, संजय शर्मा, राजेश सिंह, हेमंत अग्रवाल, रामदास चतुर्वेदी, राजवीर सिंह आदि ने इसे पार्टी की बड़ी क्षति बताया है।

आज — आगरा, 06 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन पर किया हर्ष व्यक्त

मथुरा। केन्द्र सरकार द्वारा जम्मू कश्मीर से धारा 370 व 35ए को समाप्त करने के फैसले का संस्कार जागृति मिशन ने स्वागत करते हुए हर्ष व्यक्त किया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व गृहमंत्री अमित शाह को बधाई दी। मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि आज का एतिहासिक दिन है, अब पूरे देश में एक ही संविधान व ध्वज लागू रहेगा। सरकार का यह फैसला कश्मीर की समस्या को हल करने में यह अहम कदम होगा। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने शाह की अगस्त क्रांति है। स्वतंत्र भारत का एतिहासिक फैसला है। सही मायने में आज जम्मू कश्मीर को आजादी मिली है। जो कश्मीर में आतंकियों से लडते रहे यह फैसला उन शहीदों का सम्मान है । पूरे देश को इस पल का इंतजार था। नवीन शर्मा ने कहा आज देश पूर्ण स्वतंत्र हुआ है। पाकिस्तान के लिए भी यह फैसला करारा जवाब है। हर्ष व्यक्त करने वालों में डा.अर्चना प्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, वंदना प्रिय आर्य,

राजपथ मथुरा — 04 अगस्त 2019

ताराधाम कॉलोनी में संस्कार जागृति मिशन ने किया वृक्षारोपण

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। टाउनशिप क्षेत्र की ताराधाम कॉलोनी में रविवार को संस्कार जागृति मिशन द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गयाए जिसमें मिशन द्वारा करीब चार दर्जन पेड़ लगाए गए और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हुए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लिए संकल्पित किया गया। मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि वृक्ष जीवन के स्तम्भ होते हैं। पेड़ों के बिना धरती पर जीवन नामुमकिन है। पेड़ हमें फल देते हैं और धरती पर जीवों के लिए ... कल वृक्ष बनता है जो आने वाली पीढ़ियों को फायदा पहुंचाता है। ... वृक्षारोपण में प्रमुख रूप से विवेक प्रिय आर्य, दीपक

ब्रज गरिमा — 4 अगस्त 2019

ताराधाम कॉलोनी में रौपे चार दर्जन वृक्ष

संस्कार जागृति मिशन ने किया पर्यावरण के प्रति जागरूक

मथुरा,टाउनशिप क्षेत्र की ताराधाम कॉलोनी में आज संस्कार जागृति मिशन द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया,जिस में मिशनद्वारा करीब चार दर्जन पेड़ लगाए गए और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हुए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लिए संकल्पित किया गया । मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि वृक्ष जीवन के स्तम्भ होते हैं । पेड़ों के बिना धरती पर जीवन नामुमकिन है । पेड़ हमें फल देते हैं और धरती पर जीवों के लिए भोजन का प्रबंध करते हैं । उन्होंने कहा कि आज लगाया गया पौधा कल वृक्ष बनता है जो आने वाली पीढ़ियों को फायदा पहुँचाता है ।दीपक सारस्वत ने कहा कि पेड़ हवा, पानी, भोजन, चारा जैसी बहुमूल्य चीजें मनुष्यों को देते हैं । वृक्षारोपण में प्रमुख रूप से विवेकप्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, शिवा यादव, विशाल सिंह, उत्कर्ष प्रताप सिंह, योगेश शर्मा, मुकेश सोनी आदि थे ।

छोटी सी बात — मथुरा | बुधवार | 04 जून 2019

चार दर्जन वृक्ष लगाये

मथुरा (छोटी सी बात)। टाउनशिप क्षेत्र की ताराधाम कॉलोनी में संस्कार जागृति मिशन द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मिशन द्वारा करीब चार दर्जन पेड़ लगाए गए और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हुए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लिए संकल्पित किया गया। मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि वृक्ष जीवन के स्तम्भ होते हैं। पेड़ों के बिना धरती पर जीवन नामुमकिन है। पेड़ हमें फल देते हैं और धरती पर जीवों के लिए भोजन का प्रबंध करते हैं। उन्होंने कहा कि आज लगाया गया पौधा कल वृक्ष बनता है जो आने वाली पीढ़ियों को फायदा पहुंचाता है। दीपक सारस्वत ने कहा कि पेड़ हवा, पानी, भोजन, चारा जैसी बहुमूल्य चीजें मनुष्यों को देते हैं। वृक्षारोपण में प्रमुख रूप से विवेक प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, शिवा यादव, विशाल सिंह, उत्कर्ष प्रताप सिंह, योगेश शर्मा, मुकेश सोनी आदि मौजूद थे।

हिन्दुस्तान • आगरा • रविवार • 04 अगस्त 2019 •

संस्कार मिशन ने किया यज्ञ

संस्कार जागृति मिशन द्वारा शनिवार को ताराधाम कालोनी में आयोजित हरियाली तीज कार्यक्रम में मिशन के पदाधिकारियों ने विधि-विधान से यज्ञ किया और प्रेम व आपसी सौहार्द की कामना की। मिशन के पदाधिकारियों द्वारा पार्क में वृक्षारोपण भी किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य आदि मौजूद थे।

अमर उजाला — आगरा | सोमवार, 5 अगस्त 2019

पर्यावरण के प्रति किया जागरूक

मथुरा। टाउनशिप क्षेत्र की ताराधाम कॉलोनी में रविवार को संस्कार जागृति मिशन द्वारा वृक्षारोपण किया गया। जिसमें मिशन द्वारा करीब चार दर्जन पेड़ लगाए। पदाधिकारियों ने पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हुए लोगों को अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लिए संकल्पित किया गया। मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, शिवा यादव, विशाल सिंह, उत्कर्ष प्रताप सिंह, योगेश शर्मा, मुकेश सोनी आदि थे। ब्यूरो

अमर उजाला — आगरा | रविवार, 4 अगस्त 2019

पदाधिकारियों ने पार्क में पौधरोपण किया

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा शनिवार को ताराधाम कॉलोनी में हरियाली तीज का त्योहार मनाया गया। पदाधिकारियों ने पार्क में पौधरोपण भी किया गया। अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, पिंकी यादव, कमलेश सिसोदिया, प्रीति सोनी, उत्कर्ष प्रताप सिंह, आराध्या कुंतल थे। संयोग फाउंडेशन ने प्रोजेक्ट प्रकृति के तहत यमुना मिशन पर पौधरोपण किया। कोषाध्यक्ष सारिका भाटिया, हेमंत गोयल, अध्यक्ष प्रशांत वर्मा, सदस्य गुंजन चौबे, शैलेन्द्र शर्मा, मेघा माहेश्वरी, रविन्द्र, लता माहेश्वरी, जितेंद्र कुमार, रूबी अग्रवाल, मानसी भाटिया, विदिशा उपस्थित थीं। ब्यूरो

राजपथ मथुरा — 05 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन ने जम्मू में धाराओं को समाप्त करने पर जताया हर्ष

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। केन्द्र सरकार द्वारा जम्मू कश्मीर से धारा 370 व 35ए को समाप्त करने के फैसले का संस्कार जागृति मिशन ने स्वागत करते हुए हर्ष व्यक्त किया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व गृहमंत्री अमित शाह को बधाई दी। मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि आज का एतिहासिक दिन है, अब पूरे देश में एक ही संविधान व ध्वज लागू रहेगा। सरकार का यह फैसला कश्मीर की समस्या को हल करने में यह अहम कदम होगा। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि यह फैसला अद्भुत, अविश्वसनीय, अकल्पनीय है ये पीएम मोदी व गृहमंत्री शाह की अगस्त क्रांति है। स्वतंत्र भारत का एतिहासिक फैसला है। सही मायने में आज जम्मू कश्मीर को आजादी मिली है जो कश्मीर में आतंकियों से लडते रहे यह फैसला उन शहीदों का सम्मान है। पूरे देश को इस पल का इंतजार था। नवीन शर्मा ने कहा आज देश पूर्ण स्वतंत्र हुआ है। पाकिस्तान के लिए भी यह फैसला करारा जवाब है। हर्ष व्यक्त करने वालों में डा. अर्चना प्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, वंदना प्रिय आर्य, सत्यप्रिय आर्य, नवीन शर्मा, लव गौर, हेमंत सैन, नीरज राठौर आदि उपस्थित थे।

ब्रज गरिमा — 3 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन ने मनाया तीज का त्यौहार

मथुरा, संस्कार जागृति मिशन द्वारा ताराधाम कॉलोनी में हरियाली तीज का त्यौहार मनाया गया । इस अव... के पदाधिकारियों द्वारा वैदिक ... से यज्ञ किया गया और प्रेम व आ... की कामना की गई । इस दौ... पदाधिकारियों द्वारा पार्क में ... किया गया । कार्यक्रम में प्रमुख ... की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आ... वंदना प्रिय आर्य, विवेक प्रि... यादव, कमलेश सिसोदिया, उत्कर्ष प्रतापसिंह, आराध्या कुं... आदि मौजूद रहे ।

राजपथ मथुरा — 03 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन ने मनाया तीज पर्व

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा शनिवार ... में हरियाली ... या गया। इस ... पदाधिकारियों ... विधान से यज्ञ ... व आपसी ... की गई। इस ... धिकारियों द्वारा ... किया गया। ... रूप से मिशन ... ना प्रिय आर्य, आर्य, विवेक ... दव, कमलेश ... सोनी, उत्कर्ष ... कुंतल, संस्कार

आज — 04 अगस्त 2019

संस्कार जागृति मिशन ने मनाया तीज का त्यौहार

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा शनिवार को ताराधाम कालोनी में हरियाली तीज का त्यौहार मनाया गया। इस अवसर पर मिशन के पदा. धिकारियों द्वारा वैदिक विधि-विधान से यज्ञ किया गया और प्रेम व आपसी

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''
(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम
तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां
देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्काइब करें।